P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महर्षि दयानन्द पर आधारित संस्कृत महाकाव्यों में महाकाव्यत्व

सुनीता मीरवाल
शोधार्थी,
संस्कृत विभाग,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

आशुतोष पारीक
सहायक आचार्य,
संस्कृत विभाग,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश

'महत् च असौ काव्यम्' इति महाकाव्यम् अर्थात् जो बड़ा या विशाल होता है उसे ही महाकाव्य कहते हैं। संस्कृत साहित्य में महाकाव्यों का विशिष्ट स्थान है क्योंकि महान् आदर्श को सम्मुख रखकर ही महाकाव्य का सृजन किया जाता है, जो कि आदर्श समाज का निर्माण करते हैं। आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द का जीवन भी संस्कृत साहित्यज्ञों के लिए आदर्श रहा है,जिसे कवियों ने अपने महाकाव्य का नायक बनाकर काव्य की रचना की है। महर्षि दयानन्द 19वीं शताब्दी के महान् प्रतिभा सम्पन्न महापुरुष थे, जिन्होंने धर्म, समाज, संस्कृति तथा राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में नवचेतना का संचार किया। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व महाकाव्य का विषय था। उन पर रचित संस्कृत महाकाव्यों के द्वारा उनके जीवनवृत्त को काव्यात्मक शैली के माध्यम से सभी से परिचित करवाना व उनके वैदिक राष्ट्र का अवबोध करवाना ही महाकाव्यों का विषय है। शोध पत्र में सम्बद्ध सभी महाकाव्य महाकाव्यत्व के गुणों से युक्त है, इसका विश्लेषण ही शोधपत्र का विषय है, जो संस्कृत साहित्य की दृष्टि से अत्यन्त उपादेय है।

मुख्य शब्द : महाकाव्य, काव्यात्मक शैली, जीवनवृत्त, नायक, महाकाव्यत्व, महापुरुष, नवचेतना व्यक्तित्व, कृतित्व, वैदिक राष्ट्र, आदर्श समाज, साहित्यज्ञ, आधुनिक युग, सृजन उपादेय, विश्लेषण।

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य की रसनिर्झरिणी में महाकाव्यों के लेखन की परम्परा सहस्त्राब्दियों से ही समस्त भारत में प्रवाहित होती रही है और आधुनिक युग में भी हो रही है। इसी युग में महर्षि दयानन्द के जीवन और कर्मठ व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक साहित्यकारों ने महाकाव्यों की रचना की है। उन पर रचित कुछ प्रमख महाकाव्य निम्न है –

1. पं. अखिलानन्द शर्मा रचित दयानन्ददिग्विजयम्
2. पं. मेधाव्रताचार्यकृत दयानन्ददिग्विजयम्
3. पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत आर्योदय महाकाव्य
4. आचार्य रमाकान्तोपाध्याय विरचित श्रीदयानन्दचरित महाकाव्य
5. पं. दिलीपदत्त शर्मा रचित मुनिचरितामृतम्
6. श्रीकान्ताचार्य लिखित युगनिर्माताः स्वामी दयानन्द
7. डॉ. धर्मवीर कुण्डू रचित दयानन्द भास्करोदय

महाकाव्य को काव्य की सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं गौरवगरिमा से मण्डित विद्या के रूप में स्वीकार किया गया है। संस्कृत के काव्याचार्यों में से महाकाव्य का लक्षण प्रस्तुत करने वाले प्रमुख आचार्य है– भामह, दण्डी, रुद्रट, भोजराज, हेमचन्द्र और विश्वनाथ। इस संदर्भ में साहित्यदर्पणकार 'विश्वनाथ' ने 'साहित्यदर्पण' में महाकाव्य का विशद और साङ्गोपाङ्ग विवेचन किया है–

"सर्गबन्धो महाकाव्यं ..... सर्गोपादेयकथया सर्गनाम तु।।"[1]

अधिकांश आधुनिक विचारक आचार्य विश्वनाथ के विचारों को ही प्रामाणिक मानते हैं। महाकाव्यत्व की इस कसौटी पर स्वामी दयानन्द पर आधारित ये सातों महाकाव्य खरे उतरते हैं या नहीं इसे इस शोध पत्र में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इनका वर्णन निम्न प्रकार वर्णित है–

सर्गबन्धता

"सर्गबन्धो महाकाव्यं" अर्थात् किसी भी महाकाव्य का विभाजन सर्गों पर आधारित होता है। लक्षणानुसार महाकाव्य में कम से कर्म आठ सर्ग होने अनिवार्य है, इससे कम सर्ग, होने पर रचना का महाकाव्यत्व बाधित होगा। मूल अनिवार्य बात है – कथा का व्यवस्थित सर्गबद्ध नियोजन तुलनात्मक महाकाव्यों में सभी की कथावस्तु का विभाजन सर्गों में ही किया गया है। पं. अखिलानन्द शर्मा

विरचित 'दयानन्ददिग्विजयं' में 21 सर्ग, मेधाव्रताचार्य रचित 'दयानन्ददिग्विजयं' में 27 सर्ग, श्री रमा कान्तोपाध्याय रचित श्रीदयानन्द चरित महाकाव्य में 20 सर्ग, श्रीकान्ताचार्य के युग निर्माताः स्वामी दयानन्द में 12 सर्ग, पं. गंगा प्रसादोपाध्याय के आर्योदय महाकाव्य में 21 सर्ग डॉ. धर्मवीर कुण्ड कृत दयानन्द भास्करोदयः में 17 सर्ग व पं. दिलीपदत्त रचित मुनिचरितामृतम् में 11 बिन्दु हैं।

अतः ये सभी महाकाव्य महाकाव्यत्व के सर्गबन्धता गुण से युक्त हैं इसमें कोई संदेह नहीं है। इन सभी आलोच्य महाकाव्यों में सर्गों की संख्या 8 से अधिक है, जो कि महाकाव्य के लक्षणानुसार है।

नायकत्व

"तत्रैको नायकः सुरः" महाकाव्य के लक्षणानुसार नायक योग्य, सद्वंश, वीर धीर और उदात्त गुणों से युक्त होना चाहिए। महर्षि दयानन्द धीरोदात्त नायक के सभी गुणों से युक्त थे।

–तस्योवंविधवृत्तस्य धीरोदात्तस्य धीमतः।[2]

स्वामी दयानन्द इन गुणों के अतिरिक्त क्षमाशील भी थे, उन्होंने स्वयं को विष देने वाले व्यक्ति को भी उदार हृदय से क्षमा कर दिया था। उनके इन गुणों की प्रशंसा करते हुए धर्मवीर कुण्डू ने 'दयानन्दभास्करोदयः' महाकाव्य में लिखा है –

क्षमावृत्तेरियं नूनं सत्यमेव दयानिधेः।
साधुतायाः पराकाष्ठाऽन्तिमाभूमि हितस्य च।।[3]

इसी प्रकार महर्षि दयानन्द एक ऐसे महान् व्यक्तित्व थे जिनकी कृतियों, चेष्टाओं और क्रियाओं का आलोच्य महाकाव्यों में आदर्शात्मक व प्रेरणादायी चित्रण किया गया है, जो कि भारतीय महाकाव्यों के नायक के गुणों का पूर्णरुपेण प्रतिनिधित्व करता है।

रसत्वम्

"श्रृंगारवीरशान्तानामेकोङ्गीरस इष्यते अंङ्गानि सर्वेऽपि रसाः।" साहित्यिक लक्षणानुसार महाकाव्य श्रृंगार, वीर, शान्तः आदि रसों में से कोई एक रस प्रधान हो और अन्य रसों का समुचित समावेश हो। स्वामी दयानन्द धीरोदात्त नायक के गुणों से युक्त है तथा उनकी करुणा और क्षमाशीलता के कारण इन महाकाव्यों में शान्तरस की प्रधानता रही है तथापि जहाँ शास्त्रार्थ आदि का वर्णन हुआ है वहां वीर रस भी प्रयोग हुआ है। मेधाव्रताचार्य रचित 'दयानन्ददिग्विजयम्' महाकाव्य में नवम सर्ग में भयानक रस का भी उदाहरण प्राप्त है –

भीमः पन्थाः पार्वतः क्लेशंकारी, कान्तारं तत्कान्तलोकैर्विहीनम्।
हिंस्त्रैः सत्वैः सर्वतः कीर्णभागं यात्रां यात्रारब्ध कुर्तुं सुधीरः।।[4]

यद्यपि शान्त रस ही इन महाकाव्यों का अंगी रस है अतः श्रृंगार जैसे विरोधी रस की कल्पना करना सम्भव नहीं हो सकता फिर भी 'मुनिचरितामृतम्' महाकाव्य में दिलीपदत्त शर्मोपाध्याय ने यथा प्रसंग उसका प्रयोग किया है। जैसे, योगी दयानन्द के चरणों का स्पर्श कोई रमणी, पुत्र–कामना के वशीभूत होकर करती है तथा स्वामी जी से आशीर्वाद मांगती है। इस प्रसंग का चित्रण करते हुए कवि कहता है –

विकीर्णबाला कृतहस्तसम्पुटा मनोहरालापविधानपण्डिता।
अमण्डिता चापि विशेषमण्डनैर्मनौज्ञरूपास्य पपात पादयोः।।[5]

इनके अतिरिक्त भी इन महाकाव्यों में विस्मय, हास्य, रौद्र, करुणा आदि रसों के भी यथा प्रसंग अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि आलोच्य महाकाव्य पाठकों को रससिक्त करने में पूर्ण समर्थ हैं।

कथावस्तु

लक्षणानुसार महाकाव्य की कथा प्रख्यात होनी चाहिए न कि काल्पनिक। कथानक का रूप रचनात्मक हो, उसकी परिणति शुभ और मंगलमयी हो। महाकाव्य की कथा ऐतिहासिक और पौराणिक हो। आलोच्य महाकाव्यों के अध्ययन से यह विदित होता है कि स्वामी दयानन्द के सद्गुणों का प्रकाश फैलाने वाले इन महाकाव्यों की कथावस्तु ऐतिहासिक और विश्वविख्यात हैं। विषयवस्तु के सौन्दर्यवर्धन में सभी कवियों की अपनी महत्ता है।

मेधाव्रताचार्य ने अपने महाकाव्य में लिखा है– "जिस प्रकार ऋषि मुनियों ने अनेकों काव्य, अलंकार, छन्द, नाट्यशास्त्र आदि अनेक ग्रन्थों की रचना द्वारा सहृदयों को आनन्द विभोर किया और पुरातन आर्य सभ्यता का प्रसार किया वैसे ही यतिवर दयानन्द ने भारतवासियों के हृदयरूपी भीत पर अद्वितीय आर्य संस्कृति का सुनहरा आदर्श चित्र खींचा है।"[6] जिसका इन महाकाव्यों में सुन्दर चित्रण कर, सहृदयों को कल्याण के पथ पर अग्रसर करने का माध्यम बन रहा है।

आचार्य रमाकान्तोपाध्याय ने भी अपने महाकाव्य में लिखा है कि 'वसुधैवकुटुम्बकस्य' की भावना के प्रसार के लिए और सर्वजन के हृदय में संस्कृत भाषा के प्रति अनुराग वर्धन के लिए कवि कर्म किया गया है। महाकाव्य के पाठक और श्रोता न केवल सहृदयता और सुसभ्यता को ही देखेंगे अपितु शीघ्र ही परनिवृत्ति का भी अनुभव करेंगे। यथा –

गतिर्वेदार्थे ते विमलमतितो न प्रतिहता,
मतिः कार्यार्थे स्वे महितमहनीया मतिमताम्।
यतिर्योगाभ्यासे नियमसहिता चेश्वरहि ता,
ततिः प्रादुर्भूता विविधगुणकर्म प्रतिकृतेः।।[7]

यही कारण है कि महर्षि दयानन्द पर आधारित ये महाकाव्य मनुष्य कल्याण की कामना के वशीभूत होकर रचे गये है जो कि कथावस्तु के साहित्यिक लक्षण से ओत–प्रोत हैं।

फलसिद्धि

महाकाव्यों के अध्ययन से धर्म–अर्थ–काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है किन्तु फल इनमें से कोई एक ही हो सकता है। तुलनात्मक महाकाव्यों के अध्ययन से प्रधानतः धर्म और मोक्ष की ही प्राप्ति होती है, अर्थ और काम तो गौण ही हैं। शान्त रस प्रधान इन महाकाव्यों में मोक्ष रूपी फल ही प्राप्त होता है। प्रातःकालीन दयानन्दकृत प्रार्थना का वर्णन करते हुए श्रीकान्ताचार्य लिखते हैं –

दशाश्व–मेधेः कृत–सान्ध्य–कृत्यो,
गम्भीर–नादेन जगौ श्रुतीः सः।

तपः प्रभावादिव सर्वत्र दिक्षु,
प्रतिध्वनिर्लोकमनांस्यकर्षतः।।[8]

निर्वेदस्थायीभाव से महाकाव्यों का शान्त रस सहृदयों में काव्यपठनान्तर शान्तचित्त मोक्ष प्राप्ति की इच्छा को जागृत करता है।

छन्द योजना

"एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः।" संस्कृतमहाकाव्यों में छन्दों का प्रयोग भी अति महत्वपूर्ण है। छन्द के विषय में साहित्यकारों ने लिखा है कि एक सर्ग में एक ही छन्द होना चाहिए या सर्गों के अन्त में छन्द परिवर्तन होना चाहिए। समीक्ष्य महाकाव्यों में छन्दों के प्रयोग में विविधता पायी जाती है, प्रत्येक महाकाव्य में सर्ग के अन्त में छन्द परिवर्तन करके आगामी कथा की सूचना देने में आवश्यकतानुसार प्रयोग किये गये हैं।

पं. दिलीपदत्त शर्मा के मुनिचरितामृतम् महाकाव्य में मन्दाक्रान्ता, द्रुतविलम्बित, शिखरिणी आदि विविध छन्दों का प्रयोग किया गया है। शिखरिणी छन्द का उदाहरण है–

विवाहे सञ्जाते कथमपिनहीच्छा फलवती,
भविष्यत्यस्माकं विविधकुलचिन्ताऽऽकुलतया।
व्रतध्वंसे पापं भवति नितरां दुःखजनकं,
विधातव्ये व्रज्या बहिरित दूतेनक्वचिदितः।।[9]

श्री मेधाव्रताचार्य के दयानन्ददिग्विजयम्महाकाव्य में प्रत्येक सर्ग में विविध छन्दों का प्रयोग किया है। छन्द प्रयोग की दृष्टि से इसका द्वादश सर्ग अतीव महत्वपूर्ण है जिसमें जो छन्द का नाम है, उसमें ही श्लोक रचना भी है। यथा –

भ्रमर विलसितच्छन्द –स्त्रीपद्मिन्यां भ्रमरविलसितम्।[10]कनकप्रभाच्छन्दः–कनकप्रभाविकासितान्तराम्बुजः।[11]

इसी प्रकार अन्य सभी महाकाव्यों में भी छन्दों के प्रयोग में कवियों ने महाकाव्य के लक्षण का पूर्णतः निर्वाह किया है।

प्रकृति वर्णन

महाकाव्यों में यथा अवसर प्राकृतिक वर्णन वह तत्व है जो काव्य की आत्मा को सजीवता प्रदान करता है। विद्वानों का मत है कि महाकाव्यों में प्राकृतिक वर्णन अवश्य होना चाहिए यथा प्रातःकाल, सूर्य, चन्द्रादि का वर्णन, पर्वत, मृगया, गजोत्सवादि का वर्णन है। इनका उचित वर्णन काव्यशास्त्र की दृष्टि से प्रशंसनीय है और स्वामी दयानन्द पर आधारित महाकाव्यों में प्राकृतिक वर्णन निपुणता के साथ प्रयोग किया है, कविवर अखिलानन्द शर्मा ने 18वें सर्ग में सूर्यास्त और चन्द्रमा के उदय को वर्णित करते हुए लिखा है–

गच्छतो दिनकरस्य वारुणीय,
आगतस्य चततो निशाम्पतेः।
पीतिमा समवदन्न वारुणी –
पानजं किमु फलं भुवस्तले।।[12]

श्री दिलीपदत्त शर्मा ने मुनिचरितामृतम् महाकाव्य में उत्तराखण्ड भ्रमण और नर्मदा नदी[13] का मनोहरी चित्रण प्रस्तुत किया। 'हिमगिरौ योगिगवेषणम्' शीर्षक पर आधारित मेधाव्रताचार्य के दयानन्ददिग्विजयम् महाकाव्य के अष्टम सर्ग में कवि ने षड्ऋतुओं[14] का वर्णन कर प्राकृतिक छटा को वर्णित किया है। इसके अतिरिक्त अन्य कवियों ने भी यथा प्रसंग महाकाव्यों में धान्यपंक्ति, नदियों, वनों, पर्वतों आदि का सुन्दर चित्रण कर पूर्ण सजगता के साथ अपने काव्य कौशल को परिपालित किया ह।

भाषाशैली

भाषा शैली का काव्य की सफलता के लिए विशिष्ट महत्व है। सरल, सरस और सुबोध भावाभिव्यञ्जक भाषा प्रभावशाली होती है। स्वामीदयानन्द पर आधारित समीक्ष्य महाकाव्यों में भाषा के ये सभी गुण सर्वत्राभिव्यक्त हैं। सर्व महाकाव्यों में छन्द, अलंकार, रीति, सूक्तियों और उक्तियों का सुन्दर वर्णन है। मुनिचरितामृतम् में सूक्ति को वर्णित करते हुए लिखा है –"बलवतीहयतो भवितव्यता।"[15]

अन्य सभी महाकाव्यों में भी प्रसाद गुण, वैदर्भी रीति का सम्यक् प्रयोग किया गया है। जिनसे इनके पठन से लोकोत्तर आनन्दकी अनुभूति होती है।

नवीन शब्दों के प्रयोग से भी कवियों ने महाकाव्यों में अपने कौशल का बेहतर प्रयोग किया है। स्वामी दयानन्द के शास्त्रार्थ कौशल को अपने शब्दों के कौशल से पं. अखिलानन्द ने लिखा है–

पौराणिक जनशङ्कां क्रमशो बम्भज्य सूक्तैरेषः।
सकलानपि पुरमनुजान्निदर्शयामास वेदसिद्धान्तम्।।[17]

अलंकार प्रयोग

"अलंङ्करोतीति अलंङ्कारः" अर्थात् हार आदि आभूषणों के समान काव्य शरीर की शोभा को बढ़ाने वाले अनुप्रास, उपमा आदि अलंकार होते हैं।[18] आलोच्य महाकाव्यों में कवियों ने यमक, उपमा, अतिश्योक्ति, निदर्शना, श्लेष्, विशेषोक्ति, रूपक आदि विविध अलंकारों का प्रयोग कर अपने काव्य सौन्दर्य का वर्धन किया है। अनुप्रास अलंकार का प्रयोग करते हुए श्री मेधाव्रताचार्य ने अपने महाकाव्य में वर्णित किया है–

लालित्यलीलाललनालयाते।
शैलोत्तमाङ्गे स विशालशाले।।[19]

दृष्टान्त, निदर्शना, विशेषोक्ति, श्लेष आदि अलंकारों के अनेक उदाहरण इनके महाकाव्यों में प्राप्त होते हैं। रूपक अलंकार के प्रयोग में रमाकान्तोपाध्याय पूर्णतः निपुणः हैं। उन्होंने अपने महाकाव्य में इसके अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। यथा –

स बालशास्त्री स्त्री श्रुतिपारदृग्बुधः दिगन्तविश्रान्तयशा महोदयः।
परन्त्वनभ्यस्त समस्तवेदवाक्, पराङ्गमुखोवादमहादेवऽभवत्।।[20]

इसी ही प्रकार अन्य सभी कवियों ने भी काव्यशास्त्रीय लक्षणानुसार अपने महाकाव्यों में विभिन्न अलंकारों का प्रयोग कर काव्य सौन्दर्य को बढ़ाया है।

नामकरण

'कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकरस्येतरस्य वा।' अर्थात् महाकाव्यों का नामकरण कवि, कथा अथवा नायक के नाम पर आधारित होता है। आलोच्य महाकाव्यों का नामकरण नायकाधारित है यथा – अखिलानन्द और मेधाव्रताचार्य जी का दयानन्ददिग्विजयम्, दिलीपदत्त शर्मा

का मुनिचरितामृतम् रमाकान्तजी का श्रीदयानन्दचरितम् व श्रीकान्ताचार्य का युग निर्माताः स्वामी दयानन्द आदि।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधालेख के माध्यम से युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के राष्ट्रोंन्नयन के लिए किये गये कार्यों व उनके जीवनवृत्त को आधार बनाकर लिखे गये संस्कृत महाकाव्यों से सभी को परिचित करवाया जाएगा। इन महाकाव्यों में साहित्यशास्त्र के लक्षणों का क्रमबद्ध व उदाहरण सहित विश्लेषण भी इस शोधपत्र में प्रस्तुत किया जाएगा।

निष्कर्ष

अतः स्वामी दयानन्द पर आधारित इन महाकाव्यों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है। कि ये सभी महाकाव्य महाकाव्यत्व के शास्त्रीय लक्षणों से परिपूर्ण है और स्वामी दयानन्द के विचारों का काव्यात्मक शैली के माध्यम से व्यापक प्रसार करने में सफल सिद्ध हुए हैं। इस शोधालेख के माध्यम से इन सभी संस्कृत महाकाव्यों के शास्त्रीय लक्षणों का वर्णन किया गया है, जिससे यह ज्ञात होता है कि ये सभी महाकाव्य महाकाव्यत्व की कसौटी पर खरे हैं।

अंत टिप्पणी

1. *साहित्य दर्पणम् – विश्वनाथाचार्यः 1974, साहित्य भण्डार मेरठ, 6 परिच्छेद, कारिका 315–325*
2. *दयानन्ददिग्विजयम् पं. अखिलानन्द शर्मा, 2027 वि. आर्यधर्म प्रकाशन, शामली, उ.प्र., 2/1*
3. *दयानन्दभास्करोदयः – डा. धर्मवीर कुण्डू, आचार्य प्रिन्टिंग प्रेस, रोहतक 8/25*
4. *दयानन्ददिग्विजयम् श्री मेधाव्रताचार्य, द्वितीय संस्करणम् 1995 ई. कन्यागुरुकुल महाविद्यालय, नरेला, दिल्ली, 9/69*
5. *मुनिचरितामृतम् – दिलीपदत्तशर्मोपाध्याय 11/42*
6. *दयानन्ददिग्विजयम् 7– मेधाव्रताचार्य, द्वितीय संस्करणम् 1995 ई. कन्यागुरुकुल महाविद्यालय, नरेला, दिल्ली, 8/41–42*
7. *श्री दयानन्दचरितम् – आचार्य रमाकान्तोपाध्याय 5/101*
8. *युगनिर्माताः स्वामी दयानन्द श्रीकान्ताचार्य, 1991 ई. नागप्रकाशक, दिल्ली, 7/2*
9. *मुनिचरितामृतम् श्रीदिलीपदत्त शर्मा, 3/67*
10. *दयानन्ददिग्विजयम् – आचार्य मेधाव्रतः, द्वितीय संस्करणम् 1995 ई. कन्यागुरुकुल महाविद्यालय, नरेला, दिल्ली, 12/121*
11. *वही, 12/122*
12. *दयानन्ददिग्विजयम् – पं. अखिलानन्द शर्मा, 2027 वि. आर्यधर्म प्रकाशन, शामली, उ.प्र., 18/70*
13. *मुनिचरितामृतम् श्रीदिलीपदत्त शर्मा, 8–9–10 बिन्दु*
14. *दयानन्ददिग्विजयम् मेधाव्रताचार्य, द्वितीय संस्करणम् 1995 ई. कन्यागुरुकुल महाविद्यालय, नरेला, दिल्ली, 8/13–76*
15. *मुनिचरितामृतम् श्रीदिलीपदत्त शर्मा, 4/47*
16. *योग्यस्य योग्येन सहभाति सङ्। 8/12*
    सतां हि चेतांसि दयामृदूनि। 13/33
    किंधर्षितुं दिनमणिं प्रभवोदिवान्धाः। 13/39,
    दयानन्ददिग्विजयम् – श्री मेधाव्रताचार्य, द्वितीय संस्करणम् 1995 ई. कन्यागुरुकुल महाविद्यालय, नरेला, दिल्ली,
17. *दयानन्ददिग्विजयम् – पं. अखिलानन्द शर्मा, 2027 वि. आर्यधर्म प्रकाशन, शामली, उ.प्र., 12/72*
18. *उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित्।*
    हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः।।,
    काव्यप्रकाश–मम्मटाचार्य, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 6/67
19. *दयानन्ददिग्विजयम् – आचार्य मेधाव्रतः, द्वितीय संस्करणम् 1995 ई. कन्यागुरुकुल महाविद्यालय, नरेला, दिल्ली, 8/64*
20. *श्री दयानन्दचरितम्–आचार्य रमाकान्तोपाध्याय, 6/34*